द्वितीय अध्याय

खण्डकाव्य – सैद्धान्तिक समीक्षा

द्वितीय अध्याय

खण्डकाव्य – सैद्धान्तिक समीक्षा

"**खण्डकाव्य सैद्धान्तिक विवेचन**

1. खण्डकाव्य परिचय
2. काव्य का वर्गीकरण
3. खण्डकाव्य हिन्दी में स्वरूप
4. खण्डकाव्य – परिभाषा
5. खण्डकाव्य के लक्षण – अ) कथावस्तु, ब) पात्र क) उद्देश्य
6. खण्डकाव्य वर्गीकरण
7. खण्डकाव्य और अन्य समान काव्यरूप – अ) खण्डकाव्य एवं महाकाव्य, ब) खण्डकाव्य एवं एकार्थ काव्य, क) खण्डकाव्य एवं कथाकाव्य, ड) खण्डकाव्य एवं मिश्रकाव्य, इ) खण्डकाव्य एवं गीतिकाव्य ।
8. आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य परम्परा ।

खण्डकाव्य : सैध्दान्तिक समीक्षा । विवेचन

काव्य मानव मन की भावाभिव्यक्ति का रूप है। कवि मन के भाव जब पद्यरूप धारण हैं, तब काव्य निर्माण होता है। काव्य के स्वरूप इसतरह स्पष्ट किया गया है – 'जिस काव्यसमुह में अलंकार स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो तथा जो गुण से युक्त और दोषों से मुक्त हो उसे काव्य कहते है।"[1] लेकिन भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य शब्द का जिस व्यापक अर्थ में प्रयोग किया गया है उस अर्थ में प्रयुक्त न करके उसे संस्कृत के काव्य शब्द को कुछ अंशोंतक हिंदी के "साहित्य" शब्द का समानार्थी माना है। इसमें न केवल गद्य और पद्य रचनाओं का समावेश होता है। बल्कि नाटक तथा नाटकादि सभी रचनाएँ इसके अंतर्गत ली जाती है।

काव्य का वर्गीकरण :-

भारतीय एवं पाश्चात्य आचार्यो ने काव्य का वर्गीकरण विभिन्न आधारोंपर किया हैं। आचार्यो में से भामह ने प्रतिपाद्य वस्तु तथा बंध के आधारपर काव्य का वर्गीकरण करने का प्रयत्न किया है। "वामन ने छंद और बंध के आधारपर 1) अनिबध्द तथा , 2) निबध्द ये रूप माने है।"[2] दण्डी के मुक्तक, कुलक कोश संघात ये भेद माने तथा इस तरह के पद्यों को सर्गबध्द काव्य का अंशरूप कहा है। रूद्रट ने कथावस्तु और स्वरूप विधान के आधारपर , 1) महत प्रबंध काव्य तथा , 2) लघु प्रबंध काव्य दो भेद किये। संस्कृत के उपर्युक्त आचार्यों का काव्यसंबंधी वर्गीकरण देखने पर आचार्य विश्वनाथ का वर्गीकरण इस दृष्टिसे विशेष सफल लगता है। उन्होंने सर्वप्रथम "साहित्यदर्पण" ग्रंथ में खण्डकाव्य शब्द का प्रयोग किया और इंद्रियों को प्रभावित करने के आधारपर "काव्य के श्रव्य और दृश्य" ये दो भेद किये। फिर उन्होंने श्रव्य काव्य के दो भेद पद्यकाव्य और गद्यकाव्य करने के उपरान्त पद्यकाव्य के मुक्तक युग्मक, सैध्दान्तिक कलापक और कुलक तथा सर्गबध्द महाकाव्य काव्य और खण्डकाव्य ये भेद किये।"[3] उपर्युक्त भेदों में से प्रथम पाँच अनिबध्द या मुक्तक कोटि की श्रेणी में और अंतिम तीन निबध्द या प्रबंधकाव्य की कोटि में आते हैं। इसप्रकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार प्रबंधकाव्य के तीन भेद हुए, 1) महाकाव्य, 2) काव्य, 3) खण्डकाव्य । इस दृष्टि से खण्डकाव्य की अवधारणा का प्रारंभ यहीं से होता हैं। संस्कृत विद्वानों के मतों के आधारपर हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि दण्डीद्वारा प्रयुक्त संघात तथा रूद्रट द्वारा उल्लिखित खण्डकाव्य के ही पर्याय रूप में प्रचलित हैं।

खण्डकाव्य शब्द का हिंदी में स्वरूप :-

"खण्डकाव्य" शब्द का प्रयोग हिंदी में खडीबोली की काव्यरचना के साथ प्रचलित और प्रसिध्द हो गया। द्विवेदी युग के कुछ कवियों ने महत्वपूर्ण विषयों पर काव्यरचना कर उसके खण्डकाव्य होने का भी उल्लेख कर दिया। लेकिन द्विवेदीयुगीन रचनाकारों और आलोचकों ने प्रबंध काव्य के केवल दो भेदों को स्वीकार कर लिया। 1) महाकाव्य तथा, 2) खण्डकाव्य इन अलोचकोंने प्राय: आचार्य विश्वनाथ द्वारा संबोधित काव्य नामक भेद को लुप्त कर दिया। इसके बाद "आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पहली बार प्रबंध काव्य का एक और रूप एकार्थ काव्य को मानते हुए प्रबंध काव्य के तीन भेदों को मान्यता दी – महाकाव्य, एकार्थ काव्य और खण्डकाव्य। "[4]

हिंदी के महान आलोचक "आचार्य गुलाबराय" ने अपनी पुस्तक "काव्य के रूप में साहित्य के लिए समानार्थी शब्द "काव्य" का प्रयोग किया और उसके दृश्य और श्रव्य नामक दो भेद किये। फिर उन्होंने श्रव्य काव्यों के दो भेद मुक्तक और प्रबंध को मान्यता दी तथा प्रबंध के अंतर्गत महाकाव्य और खण्डकाव्य इसतरह काव्य के दो भेद स्वीकार किये। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य गुलाबराय के मतानुसार प्रबंध काव्य के केवल दो ही भेद होते हैं – खण्डकाव्य और महाकाव्य । गुलाबरायजी ने काव्य के इन दो भेदों के व्यतिरिक्त किसी तिसरे भेद की कल्पना नहीं की।"[5]

"डॉ. भगीरथ मिश्र ने काव्य के भेद पर विचार करते हुए प्रबंध काव्य के अंतर्गत खण्डकाव्य पर विचार किया है। उन्होंने अपनी किताब 'हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास' में प्रबंध काव्य के केवल दो भेद महाकाव्य और खण्डकाव्य ही माने है।"[6] इसके अलावा मिश्रजी ने अपनी दूसरी किताब काव्यशास्त्र में प्रबंधकाव्य का वर्गीकरण करते समय पद्य काव्य की तीन कोटियाँ मानी है – 1) प्रबंध, 2) निबंध, 3) निर्बन्ध । इसके पश्चात उन्होंने प्रबंध काव्य के दो भेद स्पष्ट किये। 1) महाप्रबंध, 2) खण्डप्रबंध या खण्डकाव्य। डॉ. मिश्रजी ने खंडकाव्य पर विचार करते हुए उनके दो भेद किये पहले प्रकार के खंडकाव्य को उन्होंने संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य की संज्ञा से निरूपित किया, जिसमें एक ही प्रकार के छंद में घटना या दृश्य का वर्णन किया जाता है।" डॉ. भगीरथ मिश्रजी ने खंडकाव्य के दूसरे प्रकार को अनेकार्थ खंडकाव्य नाम दिया जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार के छंदो में विविध भाषाओं के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता हैं। महाकाव्य के समान इसका विचार नहीं होता।

खंडकाव्य शब्द तथा उसके भेदों संबंधी उपर्युक्त विद्वानों के मतों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि प्राय: हिंदी के सभी आलोचकोंने प्रबंधकाव्य के दो भेद माने हैं, महाकाव्य और

सर्वांगपूर्ण विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं; जिससे खंडकाव्य संबंधी उनकी दृष्टि कम महत्व की रही है।

हिन्दी विद्वानोंद्वारा परिभाषाएँ :-

संस्कृत आचार्यो के समान हिंदी के आचार्यो ने भी खंडकाव्य को अपने अपने दृष्टियों से उसके स्वरूप को देखकर परिभाषाबद्ध बनाने की कोशिश की है।

1. डा. भगीरथ मिश्र :-

मिश्रजी के मतानुसार खंडकाव्य में कथावस्तु संपूर्ण न होकर उसका एक अंश ही होती है, जिसमें जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्‌घाटन होता है और अन्य प्रसंग संक्षेप में रहते है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने "हिंदी काव्य शास्त्र का इतिहास" इस ग्रंथ में खंडकाव्य की परिभाषा इस प्रकार की है -

"खंडकाव्य वह प्रबंधकाव्य हे जिसमें किसी भी पुरूष के जीवन का कोई अंश ही वर्णित होता हैं पूरी जीवनगाथा नहीं । इसमें महाकाव्य के सभी अंग न रहकर एकाध अंग ही रहते हैं।"[8]

मिश्रजी के मतानुसार खंडकाव्य में कथासंकलन आवश्यक होता हैं सर्गबध्दता नहीं। खंडकाव्य में वस्तुवर्णन, भाववर्णन एवं चरित्र चित्रण किया जाता है पर कथाविस्तार नहीं किया जाता।

2. डा. गुलाबराय :-

आचार्य गुलाबरायजी ने खंडकाव्य में एक ही घटना को मुख्य मानकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी को आवश्यक माना है। उन्होंने खंडकाव्य का लक्षण इसप्रकार दिया हैं -

"खंडकाव्य में प्रबंधकाव्य सा तारतम्य तो रहता है किन्तु महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है। उसमें जीवन की वह अनेक रूपता नहीं रहती जो कि महाकाव्य में होती है।"[9]

गुलाबरायजी के मतानुसार खंडकाव्य का क्षेत्र महाकाव्य की अपेक्षा सभी दृष्टियों में समान होता है लेकिन महाकाव्य के सभी तत्व लघुरूप में स्वीकार किये जाते हैं।

3. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र :-

मिश्रजी ने खंडकाव्य के स्वरूप का निर्धारण करते हुए स्पष्ट किया है कि -

"महाकाव्य के ही ढंगपर जिस काव्य की रचना होती है पर जिसमें पूर्ण जीवन ग्रहण न करके खंडजीवन ही ग्रहण किया जाता हैं उसे खंडकाव्य कहते हैं।"[10]

खंडकाव्य। उपर्युक्त आचार्यो में से केवल विश्वनाथ प्रसाद मिश्रने बंध के आधारपर तीन भेद किये। 1)महाकाव्य, 2) खण्डकाव्य , 3) एकार्थ काव्य । एकार्थ काव्य नामक तीसरें भेद को मिश्रजी द्वारा मान्यता देने का आधार भी कविराज विश्वनाथ द्वारा काव्य नामक तीसरे मध्यवर्ती प्रबंध भेद के उल्लेख से प्राप्त होता हैं।

खण्डकाव्य संस्कृत परिभाषाएँ :-

हिंदी साहित्य की आधुनिक कालीन बहुतसी विधाओं का जन्म संस्कृत साहित्य से हुआ हैं। संस्कृत काव्यशास्त्र का अवलोकन करने पर यह दिखाई देता है कि संस्कृत के आचार्यो ने खंडकाव्य का विवेचन विस्तार के साथ नहीं किया है। इसके स्वरूप की कल्पना सर्वप्रथम रूद्रट के मस्तिष्क में आयी जब उन्होंने कथा, अख्यायिका आदि की तरह प्रबंधकाव्य के महत एवं लघु दो रूप बनायें। लेकिन खंडकाव्य नाम और उसके निश्चित स्वरूपकी कल्पना का सारा श्रेय आचार्य विश्वनाथ को हैं, तभी से अनेक विद्वानोंने खंडकाव्य का स्वरूप तथा उसकी विशेषता को ध्यान में रखकर उसे परिभाषा बध्द बनाने का प्रयास किया हैं। उनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नानुसार हैं – ।

आचार्य विश्वनाथ :-

आचार्य विश्वनाथ ने "साहित्य दर्पण" में प्रबन्धकाव्यके इस भेद को स्वीकार करते हुए उसके लिए खंडकाव्य शब्द का प्रयोग किया तथा भारतीय काव्यशास्त्र में उन्होंने सर्व प्रथम खंडकाव्य की परिभाषा की जो इसप्रकार है "

"भाषा विभाषा निमात्काव्य सर्गसमुत्सितम्।
एकार्थ प्रवणैः पद्यै सन्धि सामग्यवर्जितम्।
खंडकाव्य भवेत काव्यसेक देशानुसारिच।"[7]

खंडकाव्य संबंधी उपर्युक्त परिभाषा का विवेचन करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि, भाषा या उपभाषा में सर्गबध्द तथा एक कथा निरूपण करनेवाला पद्य ग्रंथ जिसमें समस्त संधीयाँ न हो -- काव्य कहा जाता है और काव्य के एक अंश का अनुसरण करनेवाला खंडकाव्य है। उन्होंने आगे लिखा है कि खंडकाव्य वह है जो किसी घटना विशेष को लेकर रचा गया हो।

आचार्य विश्वनाथ के अलावा रूद्रट, भामह, आनंदवर्धन आदि आचार्यो ने भी खंडकाव्य के स्वरूप की चर्चा की है। फिर भी समस्त संस्कृत आचार्यो ने महाकाव्य को अधिक महत्व देकर उसका

अपनी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बतलाया है कि यह खंडजीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता हैं जिससे वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वतः पूर्ण प्रतीत हो। खंडकाव्य का विस्तार भी थोडा होता हैं। एकार्थ काव्य की भाँति पूर्ण जीवन का कोई उद्दीष्ट पक्ष उसमें नहीं होता।

4. <u>बलदेव उपाध्याय :-</u>

उपाध्यायजी कविराज विश्वनाथ के काव्यस्य एकदेशानुसारि का व्यापक अर्थ लेते हुए खंडकाव्य को महाकाव्य का एकदेशानुसारि रूप मानते हैं। उनकी स्पष्ट धारणा है कि –

"वह काव्य जो मात्रा में महाकाव्य से छोटा परंतु गुणों से उससे कथमपि शून्य न हो खंडकाव्य कहलाता हैं।"[11]

उपाध्यायजी के उपर्युक्त परिभाषा के आधारपर यह स्पष्ट हो जाता है कि महाकाव्य और खण्डकाव्य में केवल मात्रा भेद होता हैं, गुणभेद नहीं।

5. <u>हिन्दी विश्वकोष :-</u>

"जो काव्य संपूर्ण लक्षण युक्त न हो खण्डकाव्य है।"[12] इस परिभाषा को देखने पर लगता है संपूर्ण लक्षण से क्या तात्पर्य है लगता है, अभिप्राय महाकाव्य के ही संपूर्ण लक्षणों से हैं। इसप्रकार हिंदी विश्वकोष में भी खंडकाव्य की संज्ञा देने का संकेत हैं जिसमें महाकाव्य के सभल लक्षण न होकर केवल कुछ लक्षण हो।

खण्डकाव्य संबंधी उपर्युक्त परिभाषाओं को देखनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि खंडकाव्य का मूलतत्व तो जीवन की किसी मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी घटना का प्रभावपूर्ण शैली में उद्घाटन करना है। खंडकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति को महत्वपूर्ण माना जाता है। जीवन के मर्मस्पर्शी खंड का बोधमात्र कवि के हृदय में नही होता तो उसका समन्वित प्रभाव उसके हृदयपर पड़ता है उसी वक्त प्रेरणा के बलपर जिस काव्य की रचना होती है वह खंडकाव्य कहलाता है। इस संदर्भ में डॉ. शकुंतला दुबे का यह कथन महत्वपूर्ण लगता है –

"खंडकाव्य के खंड शब्द का यह अर्थ कदापि नहीं कि वह बिखरा हुआ अथवा किसी महाकाव्य का एक खंड है, प्रस्तुत यह खंड शब्द उस अनुभूति की ओर संकेत करता है, जिसमें जीवन अपने संपूर्ण रूप में कवि को प्रभावित कर आंशिक या खंडरूप में प्रभावित करता हैं, महाकाव्य के अन्य सभी गुणों से वह युक्त नहीं होता।"[13]

खंडकाव्य पाश्चात्य धारणाएँ :-

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी खंडकाव्य संबंधी थोडासा विवेचन किया गया है। काव्य का सैध्दान्तिक रूप से वर्गीकरण युनानी समीक्षा में सर्वप्रथम प्लेटो ने किया उन्होंने काव्य के प्रमुख तीन भेद माने – 1) अनुकरणात्मक, 2) प्रकथनात्मक, 3) मिश्र । प्लेटो के बाद उसके शिष्य तथा प्रसिध्द काव्यशास्त्री अरस्तु ने भी कवि का व्यक्तित्व काव्य का विषय, काव्य का माध्यम, रीति आदि आधारों को ग्रहण करके काव्य के विभिन्न भेद निर्धारित किए। अरस्तु ने व्यक्तित्व के आधारपर वीरकाव्य एवं व्यंग्यकाव्य इसतरह दो भेद किए जिसके विषय प्रमुख तथा यथार्थ से उत्कृष्ट मानवी जीवन का चित्रण करनेवाला काव्य तथा यथार्थ मानवजीवन का चित्रण करनेवाला काव्य और यथार्थ से निष्कृष्ट मानवीजीवन का चित्रण करनेवाला काव्य इसतरह मान लिए। विषय के आधारपर भी अरस्तु ने पॉच काव्य भेदों का उल्लेख किया । 1) महाकाव्य, 2) त्रासदी, 3) कामदी, 4) रौद्रस्त्रोत, 5) संगीत काव्य। रीति की दृष्टि से उन्होंने समाख्यान काव्य तथा दुश्य काव्य इसतरह दो भेद किए। काव्य के माध्यम की दृष्टि से अरस्तु ने पद्यकाव्य तथा गद्यकाव्य इसतरह दो भेद किये।

अरस्तु के उपर्युक्त काव्यभेद उनकी प्रखर प्रतिभा का द्योतक माना जाता हैं। अरस्तु का काव्य संबंधी यही विभाजन भारतीय काव्यशास्त्रों के काव्यविभाजन से बहुत मेल खाता हैं। अरस्तु के काव्यविभाजन में श्रव्य एवं दृश्य तथा प्रबंध एवं मुक्तक का परोक्ष संकेत है। मोटे तौरपर उन्होंने काव्य के दो वर्ग किये – 1) समाख्यान काव्य, 2) दृश्यकाव्य। समाख्यान काव्यों में आख्यान की प्रमुखता रहती है, इसका प्रमुख भेद है – महाकाव्य, समाख्यान काव्यों में अरस्तु ने महाकाव्य को प्रमुख स्थान देकर उसका विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने महाकाव्य के अलावा क्षुद्र विषयोंपर आश्रित व्यंग्य, उपहासयुक्त, अवगीति काव्य को भी इसके अंतर्गत स्वीकार कर लिया है। अरस्तु के मतानुसार महाकाव्य जीवन की काव्यानुकृति है, कथानक, पात्र विचार एवं भाषा ये चार उनके मूलतत्व है। युनानी काव्यशास्त्र में प्लेटो तथा अरस्तु ने और उसके बाद दूसरे युनानी काव्यशास्त्रीयोंने महाकाव्य के अलावा उसके दूसरे लघुरूप की चर्चा नहीं की।"[14]

युरोप के समीक्षकों ने भी काव्य का विभाजन व्यक्ति और संसार को अलग स्थान देकर किया हैं। इसके आधारपर उन्होंने काव्य के दो भेद किए। 1) विषयगीत – जिसमें कवि की प्रधानता रहती हैं, तथा 2) विषयगत – जिसमें कवि के अतिरिक्त संसार की प्रमुखता रहती हैं। विषयी प्रधान काव्य को "प्रगीत" और विषय प्रधान काव्य को "ऐपिक" कहा जाता है। विषय प्रधान काव्य का

उन्होंने पुनः विभाजन किया जिसमें आख्यान काव्य एवं रूपक काव्य आ जाते हैं। आख्यान काव्यों कें अंतर्गत महाकाव्य का स्थान हैं। उसके भेदो में विकास काव्य और कला काव्य आ जाते हैं। पाश्चात्य आलोचकों ने खंडकाव्य का अलग विभाग नहीं किया लेकिन उन्होंने ऐसे कुछ काव्यरूपों की सृष्टी की जो खंडकाव्य के निकट आनेवाले हैं। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में आख्यान काव्य नामक काव्यरूप है जो भारतीय खंडकाव्य विद्या के निकट आनेवाले है। इसतरह पाश्चात्य काव्यशास्त्र में खंडकाव्य संबंधी थोडासा विवेचन दिखाई देता हैं।

खण्डकाव्य लक्षण :–

खण्डकाव्य संबंधी उपर्युक्त भारतीय तथा पाश्चात्य मतों से एक बात विशेष लक्षित होती है कि इसमें जीवन के एकही पक्ष का चित्रण होता हैं। जब जीवन का विस्तृत दृष्टिकोण से निरीक्षण और वर्णन होता है तब महाकाव्य जन्म लेता है। जहाँ जीवन का सीमित दृष्टिपथ से विश्लेषण वर्णन होता हैं, वहाँ खण्डकाव्य की सृष्टि होती हैं। लक्ष्य काव्यों के आधारपर ही तो लक्षणों का निर्धारण होता है। आधुनिक काल के लक्ष्य काव्य तो पुराने लक्ष्य काव्यों के रूप एवं भाव की दृष्टि से बदले हुए हैं। इस बदलते परिवेश में उसके लक्षणों में भी थोडा बहुत परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक हैं। आधुनिक काल से लेकर आजतक खडीबोली में हिंदी खंडकाव्य धारा निंरतर प्रवाहित हो रही हैं। द्विवेदी युग से लेकर छायावाद एवं छायावादोत्तर काल के खण्डकाव्यों में कालोचित विभिन्न काव्य प्रवृत्तियाँ दर्शित होती हैं। नवयुग में आकर यह काव्य रूप और भी सज गया और बदल गया उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखनेपर खंडकाव्य के निम्नलिखित लक्षण प्रमुखतया ठहरते हैं –

1. खंडकाव्य एक प्रबंधकाव्य है जिसमें जीवन के किसी मार्मिक पक्ष का चित्रण सीमित दृष्टिकोण से होता हैं।
2. खंडकाव्य की कथावस्तु का चयन प्रख्यात पौराणिक अथवा इतिहास प्रसिध्द घटनाओं में करना चाहिए ऐसा बंधन नहीं, कल्पना से भी कथावस्तु का निर्माण लिया जा सकता है।
3. खण्डकाव्य के नायक के लिए धीरोदत्त, धीरोध्दत, धीरललित या धीरप्रशांत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी वर्ग का कैसा भी पात्र इसका नायक हो सकता है।
4. महाकाव्य के लक्षण संकुचित रूप में स्वीकार किये जाते हैं।
5. रूप और आकार में खण्डकाव्य महाकाव्य से छोटा होता है।
6. काव्य में कथा संगठन अवश्य हो तथा उसमें एकान्विती होनी चाहिए।
7. खंडकाव्य अपने आप में संपूर्ण हो तथा उसमें प्रभावान्विति हो।

8. खंडकाव्य में कम से कम सात सर्ग होने चाहिए तथा प्रत्येक सर्ग का पूर्वापार संबंध हो।

9. काव्य में छंदोबध्दता की आवश्यकता नहीं मुक्त छंद में भी काव्यरचना हो सकती है।

10. मंगलाचरण की खंडकाव्य में कोई जरूरत नहीं है अगर हो तो ग्रंथ के आरंभ में बिलकुल संक्षिप्त होना चाहिए।

11. निर्वाह प्रवाह वर्णन ये खंडकाव्य की प्रमुख विषेषता है। क्रिया व्यापार की गति को निर्वाद रखने के लिए आवश्यक है – संक्षिप्त, ओजपूर्ण, परिस्थिति के अनुरूप, त्वरा, बुध्दिमूलक संवादों की योजना की जाए।

12. खंडकाव्य का नामकरण वृत्त अथवा नायक के आधारपर करना चाहिए।

13. पुरूषार्थ की प्राप्ति ये खंडकाव्य का उद्देश्य हो सकता है। किन्तु इसके अतिरिक्त किसी उद्दीप्त भाव को सामने रखकर मानव मन को उद्बोधित करना भी होता है। खंडकाव्य के उपर्युक्त लक्षणों को देखनेपर प्रमुख रूप से निम्न तत्व खंडकाव्य की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण ठहरते हैं।

1. <u>कथावस्तु :–</u>

खंडकाव्य की कथावस्तु का चयन प्रख्यात पौराणिक अथवा इतिहासप्रसिध्द घटनाओं से करना चाहिए ऐसा बंधन नहीं। कथावस्तु का निर्माण कल्पना से भी किया जा सकता है। इसमें पूर्ण जीवन का चित्रण न करके खंडजीवन ही ग्रहण किया जाता हैं, इसलिए खंडकाव्य में कथा संगठन आवश्यक माना गया हैं। खण्डकाव्य की कथावस्तु में प्रासंगिक कथाओं का अभाव होता हैं। कथावस्तु का सौंदर्य इसमें होता है कि वह क्षिप्रगती से बढती हुयी अपने उद्देश्यपर यथा संभव शीघ्र पहुँच जाय और मार्मिकता के साथ जीवन के विशिष्ट अंग का उद्घाटन करे। आधुनिक काल में प्रतिकात्मक खंडकाव्यों की निर्मिती विपुल मात्रा में हो रही हैं, इसीलिए खंडकाव्य का कवि किसी ऐतिहासिक पौराणिक पात्र या घटना को लेकर आधुनिक समस्या या मानवी मनोविज्ञान को प्रकट करने का प्रयास हो रहा है।

उदाहरणार्थ – "युध्द और शांति की समस्या" को लेकर लिखा गया रामधारीसिंह दिनकरजी का खंडकाव्य "कुरूक्षेत्र", मैथिलीशरण गुप्तजी के "साकेत" तथा "पंचवटी" आदि खंडकाव्य इसके उदाहरण है।

2. <u>पात्र :–</u>

पात्र या चरित्र खंडकाव्य का महत्वपूर्ण तत्व है। खण्डकाव्य में एक से अधिक पात्र हो सकते है। जो पात्र प्रधान होता है तथा जिससे संबंधित कथावस्तु होती है, उसे नायक कहा जाता

है। महाकाव्य के समान धीरोदात्तगुणों से युक्त पात्र की खंडकाव्य का नायक होना आवश्यक नहीं तो कोई भी पात्र इसका बन सकता है। खंडकाव्य में कथावस्तु से अधिक पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण तथा उनकें अंर्तद्वन्द्व तथा संघर्षो को स्थान दिया जाता है। इसके लिए पौराणिक पात्र केवल प्रतीक रूप में लिये जाते है लेकिन उनका चित्रण आधुनिक युग के अनुसार किया जाता है। उदा. – "रश्मिरथी", "शल्यवध" "द्रौपदी", "चक्रव्यूह", "गोपा–गौतम" आदि खंडकाव्य।

3. <u>उद्देश्य :–</u>

कोई काव्य निरूद्देश्य नहीं हो सकता। खंडकाव्य तो प्रबंधकाव्य का एक भेद हैं। इस दृष्टि से उसका भी अपना कोई उद्देश्य होता हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन पुरूषार्थो की प्राप्ति के अलावा किसी उद्दीप्त भाव को सामने रखकर मानव मन को उद्बोधित करना तथा पौराणिक प्रख्यात आख्यानों की मौलिक उद्भावनाओं के बलपर आधुनिक युग के नवीन परिवेश के अनुकूल रूप में प्रस्तुत करना भी होता हैं। उदा. धर्मवीर भारती की "कनुप्रिया", "अंधायुग", "दिनकरजी की "उर्वशी।" सुमित्रानंदन पंत का "लोकायतन", जगदीश गुप्त का "बोधिवृक्ष" आदि।

इसप्रकार भारतीय काव्यशास्त्र में खंडकाव्य संबंधी जिस धारणाओं को मान्यता दी है तथा खण्डकाव्यसंबंधी जो विश्लेषण, वर्गीकरण किया है उसके मूल में संस्कृत आचार्यो की खण्डकाव्य संबंधी धारणाएँ मुख्य रहीं है। कविराज विश्वनाथद्वारा निर्दिष्ट खण्डकाव्य का लक्षण ही हिंदी में उसके स्वरूप निर्धारण का मूल आधार है । सर्गबध्दता तथा सभी संधियों की योजना आवश्यक न होना किसी एक अर्थ का उद्दीष्ट होना आदि जिन्हें विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण माना।

<u>खण्डकाव्य वर्गीकरण :–</u>

संस्कृत काव्यशास्त्र को परखने पर यह दिखाई देता है कि खंडकाव्य का विवेचन वर्गीकरण संस्कृत आचार्यो ने नहीं किया हैं। हिंदी के आचार्यो का भी ध्यान समुचित रूप से इस ओर नहीं गया लेकिन कतिपय आधुनिक आचार्यो ने खण्डकाव्य के वर्गीकरण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हिंदी के आचार्यो में से सर्व प्रथम डा.भगीरथ ने "काव्यशास्त्र" नामक अपने प्रसिध्द ग्रंथ में छंदयोजना के आधारपर खंडकाव्य के दो वर्ग किये "एकार्थ और अनेकार्थ काव्य"। जिस खण्डकाव्य में आद्यंत एकही छंद का प्रयोग होता हैं वह एकार्थ काव्य तथा जिसमें अनेक छंदो का प्रयोग होता है वह अनेकार्थ काव्य हैं। प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खण्डकाव्य या खंडप्रबंध है। खंडकाव्य के दो भेद किये जा सकते हैं – एक संघात अथवा एकार्थ खंडकाव्य – जिसमें एकप्रकार के छंद में ही एक

घटना या दृश्य का वर्णन किया जा सकता है और दूसरा अनेकार्थ खंडकाव्य जिसमें अनेक प्रकार के छंदो में विविध भावों के साथ जीवन के एक अंश का चित्रण होता है।

प्रस्तुत काव्यरूप के वर्गीकरण के लिए आचार्य मिश्रजी ने जो आधार स्वीकार किया वह निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं। लेकिन काव्य के वर्गीकृत रूप के लिए उन्होंने जो नाम दिया है, उसकी सार्थकता तथा सतर्कता संदिग्ध है। एकार्थ काव्य तथा अनेकार्थ काव्य संज्ञा से वास्तविक अंर्थबोध कम ही होता हैं। इसी प्रकार डॉ. शकुन्तला दुबे, डा. निर्मला जैन ने भी वर्गीकरण लेकिन सैध्दान्तिक दृष्टि से सफल प्रतीत नहीं होता । डा. गोपालदत्त सारस्वत ने अपने वर्गीकरण में चरितनायक, सानुबंध, कथा, रस, एवं वस्तुवर्णन आदि का समावेश किया है। यह वर्गीकरण मात्र आधुनिक खंडकाव्य परंपरा का है। खंडकाव्य रूप का सैध्दान्तिक वर्गीकरण नहीं लेकिन खंडकाव्य यह चारों तत्व पात्र, कथा, रस एवं वस्तुवर्णन काव्य के वर्गीकरण का आधार बन सकते हैं। अतः खंडकाव्य का वर्गीकरण इसप्रकार हो सकता हैं –

1. कथावस्तु के आधारपर – ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आदि।
2. छंद के आधारपर – एक छंदात्मक, बहुछंदात्मक, गीतात्मक, मुक्त छंदात्मक आदि।
3. सर्ग के आधारपर – सर्गयुक्त, सर्गरहित आदि।
4. रस के आधारपर – एक रस समग्र रूप में, अनेक रस असमग्र रूप में। जैसे श्रृंगार रस प्रधान वीर रस प्रधान, करूण रस प्रधान

इसप्रकार खण्डकाव्य सचमुच अपने आप में एक निराला काव्यरूप है। अपनी विलक्षण विशेषता के कारण यह काव्यरूप अन्य काव्यरूपों के बीच अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखता है। अखंड काव्यानंद देने में समर्थ यह खंडकाव्य विधा विशेष लोकप्रिय तथा महत्व की हैं। अपने लघुरूप में होते हुए भी विभिन्नता एवं विविधता की बहुरंगी छटा दिखलानेवाली इस काव्यविधा का आश्चर्यजनक महत्व हैं। यह काव्यरूप अपने आप विविध तत्वों को ग्रहण कर विविध रूपों में निकला की इसके अनेक भेद भी हुए। ऐतिहासिक तथा विभिन्न काव्यतत्वों के आधारपर प्रस्तुत काव्यरूप के जितने भेद निकले वे वस्तुतः काव्यरूप के विकास के द्योतक हैं।

खंडकाव्य और अन्य समान काव्यरूप :–

खंडकाव्य एवं महाकाव्य :–

महाकाव्य एवं खण्डकाव्य प्रबंध काव्य के दो भेद है। सामान्यतया जीवन के विस्तृत विश्लेषण से युक्त खण्डकाव्य है।[15] खण्डकाव्य में आठ से कम सर्ग होते हैं अथवा महाकाव्य में आठ

से अधिक सर्ग होते हैं। महाकाव्य साधारणतया महान चरित्र, महान उद्देश्य, समग्र जीवन चित्रण, महान नायक एवं उदात्त शैली से परिपूर्ण होता है। खण्डकाव्य के अपने विशेष लक्षण होते हैं। खंडकाव्य का नायक किसी भी वर्ग का होता हैं। लेकिन इसमें उद्देश्य और प्रभाव की एकान्मुखता होती हैं। खंडकाव्य में जीवन का खंडचित्र होता हैं। कथावस्तु की लघुता एवं सीमित उद्देश्य के कारण वह जीवन का लघुचित्र प्रस्तुत करनेवाला पूर्ण काव्यरूप है। खंडकाव्य तथा महाकाव्य दोनों में ही कथावस्तु मुख्य रहती है लेकिन महाकाव्य में कथावस्तु का विस्तृत विवरण किया जाता है, तो खंडकाव्य में कथावस्तु का संक्षेप में वर्णित की जाती है। महाकाव्य में अवान्तर कथाओं को स्थान दिया जाता हैं, तो खण्डकाव्य में इसका स्थान नगण्य होता हैं। महाकाव्य का आरंभ मंगलाचरण वस्तुनिर्देश आदि से होता हैं, खण्डकाव्य में इसका निर्वाह होना चाहिए ऐसा बंधन नहीं। महाकाव्य एवं खण्डकाव्य दोनों काव्यों का अंत धीरे-धीरे कथावर्णन के साथ होता है।

चरित्र चित्रण , वातावरण आदि का चित्रण महाकाव्य में विस्तृत तथा खण्डकाव्य में सीमित दृष्टियों से होता हैं। प्रायः महाकाव्य वर्णनात्मक अधिक होता है, वहाँ खण्डकाव्य अधिक अनुभूतिपूर्ण होता हैं। महाकाव्य में श्रृंगार, वीर, शांत इन तीन रसों में से कोई एक रस प्रधान होता हैं तथा महाकाव्य की रचना अनेक छंदों में की जाती है। खण्डकाव्य के लिए इसीतरह का कोई बंधन नहीं। प्रायः खण्डकाव्य के समान धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से किसी एक फल की सिध्दि भी खण्डकाव्य के लिए जरूरी नहीं है। इसतरह महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनों में विषयगत तथा शैलीगत थोडासा अंतर हैं। प्रबंधकाव्य के दोनों भेद होने के कारण दोनों का समान महत्व दृष्टिगोचर होता हैं।

खण्डकाव्य एवं एकार्थ काव्य :-

एकार्थ काव्य खंडकाव्य का ही एक भेद हैं। प्रबंधकाव्य के भेद महाकाव्य एवं खण्डकाव्य के बीच आनेवाला यह काव्यरूप है। आचार्य विश्वनाथ ने इसकी परिकल्पना की हैं। उनकी परिभाषा में -

"भाषा या विभाषा में सर्गा से युक्त, संधियों की समग्रता से रहित एक ही अर्थ को लेकर रचित होनेवाला पद्यकाव्य एकार्थकाव्य हैं।"[16]

आचार्यजी के मतानुसार खण्डकाव्य एकदेशानुसारि है तो एकार्थकाव्य "एकार्थ प्रवणे पद्य" हैं। खण्डकाव्य में जीवन के एक अंश का चित्रण महाकाव्य की शैली में होता हैं। तो एकार्थ काव्य में जीवन के किसी एक पक्ष को लेकर उसीका विस्तार किया जाता हैं। खण्डकाव्य सर्गबध्द

होते हैं, एकार्थ काव्य के लिए सर्ग का कोई बंधान नहीं वह सर्गविहीन भी हो सकता हैं। खण्डकाव्य में उद्देश्य तथा संदेश की संभावना कम रहती हैं। एकार्थ काव्य में उद्देश्यगत एकार्थ प्रवणता होती हैं। खंडकाव्य में नायक का होना आवश्यक हैं, एकार्थ काव्य में नायक आवश्यक नहीं किसी घटनावृत्त में भी एकार्थात्मकता होती हैं। खंडकाव्य में कथा का विस्तार नहीं होता। एकार्थ काव्य में एक अर्थसिध्दि के हेतु नायक के जीवन उतनेही अंश का चित्रण होता हैं, जितना किसी अर्थ विशेष की सिध्दि के लिए आवश्यक है। खण्डकाव्य में एक या दो संधियों को आवश्यक माना गया हैं, परन्तु एकार्थ में ये संधियाँ हो ही ऐसा अनिवार्य नहीं है। पंडित विश्वनाथप्रसाद मिश्र के मतानुसार एकार्थ काव्य में तीन या चार संधियाँ होनी चाहिए। मिश्रजी ने स्पष्ट किया हैं –

"महाकाव्यों की ही पध्दतिपर कुछ ऐसे प्रबंधकाव्य बनते रहे हैं, जिसमें पाँच संधियों का विधान नहीं होता। तात्पर्य यह है कि इनमें पूर्ण जीवन वृत्त ग्रहण किया जाता हैं, पर उसका उतना अधिक विस्तार नहीं होता, जितना महाकाव्य में देखा जाता हैं। इसमें कथा को कोई उद्दीष्ट पक्ष प्रबल होता है।"[17]

खंडकाव्य में एक या एक से अधिक रसों का परिपाक किया जाता हैं, एकार्थ काव्य एक रसप्रधान होता हैं, प्रसंगानुरूप अन्य रसों की भी संभावना होती हैं। इसतरह खण्डकाव्य और एकार्थकाव्य में स्वरूप की दृष्टि से थोडा बहुत अंतर हैं। प्रबंध की दृष्टि से एकार्थ काव्य एक सीमातक खंडकाव्य की अपेक्षा महाकाव्य के अधिक समीप है।

खण्डकाव्य एवं कथाकाव्य :–

संस्कृत काव्यशास्त्र में कथाकाव्य नाम से किसी अलग काव्यरूप का निर्धारण नहीं हुआ है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार काव्य के तीन प्रकार पद्यबध्द, गद्यबध्द एवं मिश्र इस तरह होते हैं और गद्य व पद्य दोनों में कथाप्रबंध होते हैं। "पद्यात्मक प्रबंध को महाकाव्य व खण्डकाव्य नाम से विभूषित किया गया हैं, और गद्यात्मक प्रबंध के कथा, आख्यायिका, परिकथा आदि भेद किये गए हैं।"[18] व्यापक दृष्टि से गद्य व पद्य सभी प्रबंधों को कथाकाव्य या प्रबंधकाव्य कहा जाता हैं रूप एवं भाव की दृष्टि से यह खण्डकाव्य से भिन्न रूप हैं। इसकी कथावस्तु कल्पना से अतिरंजित होती हैं, उसमें नाटकीय संधियों का निर्वाह नहीं होता। फलस्वरूप इसकी कथावस्तु सुसंबध्द होती हैं, जिसतरह खण्डकाव्य का कोई महान उद्देश्य होता है, उसी तरह कथाकाव्य में कोई उद्देश्य नहीं रहता, सिर्फ मनोरंजन मात्र इसका लक्ष्य रहता हैं, इस दृष्टि से वह खण्डकाव्य से मेल नहीं खाता । कथा काव्य में अवान्तर

कथाओं की प्रचुरता होती हैं जो खण्डकाव्य में नहीं होती। इस दृष्टि से देखा जाय तो कथाकाव्य और खंडकाव्य में स्पष्ट अंतर दिखाई देता हैं।

खण्डकाव्य एवं मिश्रकाव्य :–

कवि की अनुभूति की अभिव्यक्ति काव्य की जननी हैं। इस अनुभूति की अभिव्यक्ति कभी महाकाव्य , कभी खण्डकाव्य तो भी गीतिकाव्य या मुक्तक काव्य का रूप ग्रहण करती है जिससे काव्य के विभिन्न रूप बन गए हैं। कुछ काव्यरूप ऐसे भी हैं जिसमें एकसे अधिक काव्यरूपों की विशेषता से परिपूर्ण होते हैं, ऐसे काव्य को मिश्रकाव्य नाम से अभिहित किया गया हैं। मिश्रकाव्य एक ऐसा काव्यरूप है जिन्हें हम प्रबन्ध भी नही मान सकते और गीतिकाव्य की कोटि में भी नहीं रख सकते। इसमें किसी अन्य काव्यरूप का स्पष्ट मिश्रण होता है तथा जो गीतों के रूप में प्रबंधात्मक लगते है और प्रबंध होकर भी मुक्तक से प्रतीत होते हैं, ऐसे काव्य को मिश्रकाव्य की संज्ञा दी जाती हैं। कुछ काव्यों में नाटक और गीतिकाव्य की शैली मिलकर एक हो जाती है। लेकिन कुछ ऐसे काव्यरूप है जिनमें प्रबंध का अविष्करण नाटकीय शैली में होता हें। जब गीतिकाव्य में आख्यान का आग्रह प्रबल रहता हैं, तब आख्यान बंध सापेक्ष होता हैं और उसी समय यह काव्य गीतिकाव्य की समा को लांघकर प्रबंधकाव्य की कोटि में पहुँच जाता हैं। किसी नाट्यप्रधान आख्यान काव्य में जीवन के एक ही महत्वपूर्ण पक्ष का चित्रण प्रबंधकाव्य के तत्वों को मानते हुए किया जाता है तो उसे नाट्यप्रधान खण्डकाव्य कहा जाता हैं। प्रबंधात्मकता इसी स्वरूप के पुट का अंश मिश्र काव्य में होने के कारण वह कुछ अंशोतक खण्डकाव्य के नजदीक का स्वरूप माना जाता हैं।

खण्डकाव्य एवं गीतिकाव्य :–

गीतिकाव्य का एक प्रकार है । जिसमें वैयक्तिक अर्थात निजि अनुभूतियों का प्रकाशन होता है। गीतिकाव्य में संगीतात्मकता या लय का प्रवाह होता है, इसमें भावात्मकता का चित्रण प्रधान रूप से होने के कारण इसका संबंध मस्तिष्क से न होकर हृदय से होता हैं और इसलिए उसका वस्तुतत्व हृदय के अनुरूप बहुत कोमल और भावनापूर्ण होता हैं और मातृभाषा का उद्धार, स्वतंत्रता आदि को प्रमुखता दी। भारतेन्दु काल में बहुत कम खण्डकाव्य लिखे गए। भारतेन्दुजी के उपरान्त हिंदी काव्य का दूसरा चरण शुरू होता है और इस काल की कविता के अग्रदूत रहे – महावीर प्रसाद द्विवेदी। द्विवेजी ने काव्य के लिए खडीबोली को अपनाया। कविता दृष्टि से यह एक युगांतरकारी घटना है, इस दृष्टि से द्विवेदी सच्चे अर्थ में आधुनिक कविता के जन्मदाता माने जाते हैं। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में "नये विचार और नयी भाषा तथा शरीर और नयी पोशाक दोनों ही नयी हिंदी को द्विवेदीजी की देन है। इसकारण वे नयी हिंदी के प्रथम और युगप्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं।"[19]

बीसवी शती के प्रथम दो दशकों में महाकाव्य, खण्डकाव्य, आख्यानकाव्य, गीतकाव्य आदि से खडीबोली का काव्यभंडार भर गया। इस काल में प्राचीन संस्कृति का पुर्नजागरण हुआ साहित्य में नाना आदर्शो की सृष्टि हुई और उसमें एक स्वच्छन्द भावना का विकास होने लगा। द्विवेजी के समकालीन कवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्रीधर पाठक रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय तथा सियारामशरण गुप्त ने प्राचीन पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि बुध्दिवादी युग के आदर्शो के अनुरूप की। द्विवेदी काल में प्रतिकात्मक खण्डकाव्यों की रचना विपुल मात्रा में हुयी।

आधुनिक हिंदी साहित्य का तृतीय चरण छायावाद नाम से जाना जाता हैं और इसके प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंद पंत, निराला एवं महादेवी वर्मा को माना जाता है। जिन्होंने अपनी अनूठी प्रतिभा तथा भावजगत के आधारपर इसके लिए कोमल रसों की अभिव्यक्ति आवश्यक मानी हैं। गीतिकाव्यों के प्रकरण संक्षिप्त होते हैं तथा इसमें सुंदरता, मनोहरता, प्रभावोत्पादकता आदि गुणों को आवश्यक माना गया हैं। गीतिकाव्य का उद्देश्य कलात्मक शैली में आंतरिक जीवन की विभिन्न अवस्थाओं, उसकी आशाओं उसकी आल्हाद की तरंगे और उसकी वेदना के चित्कारों का उद्घाटन करना ही हैं। इस दृष्टि से देखा जाय तो खंडकाव्य और गीतिकाव्य में बहुत बड़ा फर्क दिखाई देता हैं।

इसप्रकार खण्डकाव्य और अन्य समान काव्य रूपों में भाव तथा शिल्प की दृष्टि से थोड़ा बहुत अंतर रहता हैं।

<u>आधुनिक हिंदी खंडकाव्य :–</u>

हिंदी साहित्य की अन्य महत्वपूर्ण काव्यविधाओं में खंडकाव्य का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं इस विधा का विकास आधुनिक काल में ही हुआ हैं। इसके पहले खण्डकाव्यों की जो धारा प्रवाहित रही वह उतनी प्रबल न थी। आधुनिक काल की बदलती परिस्थितियों में जिस नवीन काव्यरूपों का विकास हुआ उसमें खण्डकाव्य एक हैं।

हिंदी के आधुनिक काव्य के उत्थान का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से शुरू होता है। भारतेन्दु तथा उनके समसामायिक कवियों ने कविता के भावक्षेत्र में क्रांतिद्वारा युगांतर उपस्थित किया। भारतेन्दुजी ने मध्ययुगीन पौराणिक वातावरण से साहित्य को बाहर निकाल कर उन्हें आधुनिक रूप देने का महान कार्य किया। भारतेन्दु काल में कविता मुख्यरूप से ब्रजभाषा में लिखी जाती थी। साथ ही काव्य का विषय लोकहित, देशभक्ति, सामाजिक और धार्मिक पुनर्गठन, छयावाद का भंडार भर दिया। यह काल परिवर्तन का काल हैं। इस काल में देश एवं साहित्य दोनों में परिवर्तन हुआ। सदियों की गुलामी की जंजीर तोडकर देश आजाद हो गया जिससे साहित्य पनपने का अच्छा अवसर मिला।

फलस्वरूप हिंदी काव्यधारा विकसित हुयी। इस काल की कविता का मुख्य विषय गोचर में अगोचर की खोज दिव्य का अवतरण, मानवी भावनाओं के प्रति निसर्ग का योगदान आदि रहें। इस काल के काव्य में पौराणिक, प्रख्यात आख्यानों को मौलिक उद्‌भावानाओं के बलपर आधुनिक युग के नवीन परिवेश के अनुकूल नवीन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया इस दृष्टि से धर्मवीर भारती की ''कनुप्रिया'', ''अंधायुग'' दिनकरजी की ''उर्वशी'' , सुमित्रानंदन पंत का ''लोकायतन'' आदि महत्वपूर्ण काव्यकृतियाँ हैं।

हिंदी के नयी कविता के युग में प्रबंध काव्यों की रचना प्रचुर मात्रा में हुयी, इस समय लिखे गए अधिकांश काव्यों के विषय तो पुराने ही रहें, लेकिन इस समय के कवियोंने, पुराने काव्यविषय की युक्तिसंगत मनोवैज्ञानिक व्याख्या करके काव्य सृजन किया इस दृष्टि से ''रश्मिरथी'', ''शल्यवध'', ''द्रौपदी'', ''चक्रव्यूह'', ''गोपा–गौतम'' आदि प्रबंध काव्य इसके अनुपम उदाहरण हैं। इन काव्यों में कवि ने कथावस्तु से अधिक पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण तथा उनके अंर्तद्वन्द्वों व संघर्षो को स्थान दिया बहुतांश काव्यों में पौराणिक पात्र केवल प्रतीक रूप में स्वीकार किये और उनके द्वारा किसी समस्या को प्रस्तुत किया।

हिंदी के कई महत्वपूर्ण आधुनिक खंडकाव्य तथा उनके कवि :

साकेत, जयद्रथ वध, पंचवटी, नहुष आदि – मैथिलीशरण गुप्त।

मौर्यविजय, नकुल, सुनंदा – सियारामशरण गुप्त ।

आँसू – जयशंकर प्रसाद ।

कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी – रामधारीसिंह दिनकर।

कनुप्रिया – डा.धर्मवीर भारती ।

द्रौपदी , उत्तरजय – पंडित नरेंद्र शर्मा ।

कौंतेय कथा – उदयशंकर भट्‌ट ।

दानवीर कर्ण – गुरूपद्‌म सोमवाल ।

महाप्रस्थान – नरेश मेहता ।

चक्रव्यूह – विनोदचंद्र पांडेय ।

द्रोण – रामगोपाल रूद्र ।

प्रियप्रवास, पारिजात, वैदेही वनवास – अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔंध''।

उर्मिला – बालकृष्ण शर्मा ''नवीन'' ।

जौहर – डा.रामकुमार वर्मा ।

सेनापति कर्ण – लक्ष्मीनारायण मिश्र ।

लोकायतन – सुमित्रानंदन पंत ।

महामानव – ठाकुर प्रसाद सिंह ।

कृष्णायन – द्वारिकाप्रसाद मिश्र ।

गोपा–गौतम – जगदीश गुप्त ।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त खण्डकाव्य तथा उनके विषय को देखनेपर यह ज्ञात होता है कि आधुनिक काल में विभिन्न शैलियों के खण्डकाव्यों का निर्माण हो रहा हैं ये सभी खण्डकाव्य भाव एवं रूप की दृष्टि से विशेष महत्व के हैं। । इस दृष्टि से आधुनिक हिंदी काव्य क्षेत्र में खण्डकाव्य नामक काव्यविधा ने अपना अनूठा स्थान प्राप्त किया हैं। इस दृष्टि से जगदीश गुप्त लिखित "गोपा–गौतम" और "बोधिवृक्ष" विशिष्ट काव्य परंपरा की परम उत्कृष्ट काव्य कृतिया हैं।

"गोपा–गौतम" यह संवादरूप खण्डकाव्य है और "बोधिवृक्ष" भी खण्डकाव्य हैं। "गोपा–गौतम" में ग्यारह सर्ग है लेकिन उसमें गौतम और गोपा के ग्राहस्थिक जीवन की चर्चा की गयी हैं। "बोधिवृक्ष" में बुध्द जीवन पर आधारित सोलह कविताओं का संग्रह है। इन दो खण्डकाव्यों के माध्यम से कवि ने आज की स्थितियों पर गंभीर रूप में प्रकाश डालकर आधुनिक मनुष्य की जिंदगी की अनेक समस्याओं को स्पर्श किया है। इन रचनाओं में कवि का नया चिंतन, कवि का अपना नया शिल्प है। उन्होंने पौराणिक प्रसंग को लेकर उसमें कई काल्पनिक प्रसंगो की भी उद्‌भावना की है। जिसके द्‌वार उन्होंने समाज की समस्याओं का विवेचन कर कुरीतियों का खंडन किया है।

कवि ने अपनी मौलिक सूक्ष्म और नवीन उद्‌भावनाओं से इसे सर्वथा मौलिक रूप देकर बड़ा हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बना दिया हैं।

<u>**संदर्भ सूची :-**</u>

1. अग्निपुराण, अध्याय 287 कारिका 7
2. काव्यालंकार, सुत्रे 1/3/27
3. आचार्य विश्वनाथ, ''साहित्य दपर्ण'', 6/314
4 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ''वाङ्मय विमर्श'', सं. 2006 संवत्
5. डा. गुलाबराय, ''काव्य के रूप'', चतुर्थ संस्करण, पृ. 11
6. डा. भगीरथ मिश्र, 'हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास', पृ. 421, सं. 2005 संवत्
7. आचार्य विश्वनाथ, ''साहित्य दर्पण'', परिच्छेद 6, पृ. 328-29
8. डा. भगीरथ मिश्र, -हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास', पृ. 421, सं. 2005 संवत्
9. डा. गुलाबराय, ''काव्य के रूप'', चतुर्थ संस्करण, पृ. 11
10. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ''वाङ्मय विमर्श'', पृ. 46, सं. 2006 संवत्
11. बलदेव उपाध्याय, ''संस्कृत आलोचना'', द्वितीय खंड, पृ. 62
12. संपादक नगेंद्रनाथ वसु, हिंदी विश्वकोश, पृ. 709
13. डा. शकुंतला दुबे, ''काव्य रूपों का मूल स्त्रोत और उनका विकास'', पृ. 143
14. डा. एस. तकमणि अम्मा, ''आधुनिक हिंदी खण्डकाव्य'', पृ. 23, सं. 1987
15. वही, पृ. 25
16. आचार्य विश्वनाथ, ''साहित्य दर्पण'' पृ. 6
17. पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ''वाङ्मय विमर्श'', पृ. 31
18. हेमचन्द्र, ''काव्यानुसान'', अध्याय 8
19. नंददुलारे वाजपेयी, ''आधुनिक साहित्य'', पृ. 16, सं. 2022 संवत्